IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

'झूठा-सच' और 'तमस' उपन्यास में साम्प्रदायिकता की विवेचना

अक्षतानन्द पाण्डेय
(शोधार्थी)
शोध केंद्र- राजीव गांधी शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय अम्बिकापुर,सरगुजा (छत्तीसगढ़)
(संत गहिरा गुरु विश्वविद्यालय सरगुजा,अम्बिकापुर,छत्तीसगढ़)

डॉ .दीपक सिंह
सहायक प्राध्यापक (हिन्दी)
(शोध निर्देशक)
राजीव गांधी शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
अम्बिकापुर ,सरगुजा (छत्तीसगढ़)

शोध सारांश :

15 अगस्त 1947 को एक लंबे संघर्ष के बाद भारत को विदेशी अंग्रेजी सत्ता की गुलामी से स्वतन्त्रता मिली थी | भारत विभाजन इस देश के इतिहास की बेहद महत्वपूर्ण और त्रासद भरी घटना है | इस विभाजन की घटना ने देश के स्वर्णिम इतिहास और हजारों लोगों की कुर्बानियों से प्राप्त स्वतन्त्रता को कलंकित कर दिया | देश के विभाजन ने वर्षों से एक-साथ निवासरत लोगों की एकता,संस्कृति,रीति-रिवाजों,आपसी संबंधों और भाषा को एक झटके में ही नष्ट कर दिया | विभाजित होते ही लाखों लोगों का जन-जीवन ,वर्षों पुरानी सभ्यता और संस्कृति ,वर्तमान और भविष्य ,सबकुछ विभाजन के अंधेरे में डूब गया | देश का विभाजन आज भी हमारे हृदय में एक जहरीले कांटे की तरह चुभ रहा है | भारत की आजादी को आज भले ही 78 वर्ष बीत चुके हैं | हम सभी भारतवासी प्रतिवर्ष भले ही आजादी का जश्न और खुशियाँ मनाते हैं ,आजादी के गीत गाते हैं ,लेकिन फिर भी कहीं न कहीं हमें विभाजन का वो भयानक मंजर और उससे पीड़ित लोगों की तस्वीर आज भी याद हैं ,जो विभाजन की पीड़ा को हमेशा ही याद दिलाते हैं | जिस समय आजादी की लड़ाई लड़ी जा रही थी किसी ने भी महसूस नहीं किया होगा कि देश की आजादी के साथ देश के विभाजन का भयानक और त्रासद समय ,देशवासियों को देखना पड़ेगा |

बीज शब्द -गुलामी,कलंकित,त्रासद,स्वर्णिम,मंजर,भारत,पाकिस्तान,साम्प्रदायिकता,फूट–डालो,बेहया ,अलगाव ,बंदे |

विभाजन को केंद्र में रखकर हिन्दी उपन्यास के अलावा अन्य भारतीय भाषाओं में भी प्रचुर मात्रा में रचनाएं देखने को मिलती हैं | कुछ प्रमुख हिन्दी उपन्यास 'झूठा-सच'भाग -1,भाग -2 (यशपाल), 'तमस' (भीष्म साहनी), 'कितने पाकिस्तान' (कमलेश्वर) , 'लौटे हुए मुसफिर' (कमलेश्वर) , 'आधा गाँव' (राही मासूम रजा) ने विभाजन की पीड़ा को अपने उपन्यासों में दिखाया है | विभाजन केन्द्रित उपन्यास हिंदी के अलावा अन्य भारतीय भाषाओं में भी प्रचुर मात्रा में लिखे गये हैं। उनमें से कुछ उपन्यास महत्वपूर्ण हैं, जिनका जिक्र करना विभाजन केन्द्रित उपन्यासों का नाम लेते ही जरूरी हो

जाता है। जैसे अंग्रेजी में लिखा खुशवन्त सिंह का 'ट्रेन टू पाकिस्तान', शार्क मुकद्दम का 'व्हेन फ्रीडम केम', चमन नाहन का 'आजादी', करतार सिंह दुग्गल का 'नहूं पे मासत',बंगला में लिखित जरासंध का 'उत्तराधिकार', सोहन सिंह सीतल का 'बलवंते कातल', अमृता प्रीतम का 'पिंजर', अब्दुल्लाह हुसेन का 'उदास नस्लें जैसे कई महत्वपूर्ण उपन्यासों की रचना हुई है। लेकिन अधिकतर मात्रा में विभाजन की लेख एवं चर्चा हिंदी और उर्दू उपन्यासों में ही हुई है। ये उपन्यास विभाजन से उपजी समस्याओं को आधार बनाकर लिखे गये और समस्याओं की सामाजिक चेतना एवं व्यक्ति की मानसिक दशा को गहराई के साथ प्रस्तुत करते हैं। उनका विवेचन करने में उपन्यासकार सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, आर्थिक, पारिवारिक एवं मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण का आश्रय लेते हैं।

हरियश ने लिखा है कि "ये उपन्यास विभाजन की राजनीति का तीव्र विरोध करते हैं और स्पष्ट कर देते हैं कि देश की जनता ने देश का विभाजन को स्वीकार नहीं किया। विभाजन की स्वीकृति कांग्रेस और मुस्लिम लीग की उच्चस्तरीय बैठकों तक ही सीमित रह गई, लेकिन इस स्वीकृति का सबसे बड़ा मूल्य देश की जनता को चुकाना पड़ा, जो पाकिस्तान का अर्थ बिल्कुल नहीं समझती थी |"**1**

देश विभाजन के लिए जिन्ना ने द्वि-राष्ट्र सिद्धांत को आधार बनाया जो पूरी तरह से राजनीतिक मामला था। इस सम्बन्ध में वीरेन्द्र कुमार बरनवाल ने लिखा है, "जिन्ना मुसलमानों की समस्या को राजनीतिक दृष्टिकोण से देखते थे उनके लिये सांस्कृतिक पक्ष महत्वपूर्ण नहीं था |" **2** जबकि विभाजन के बाद मुसलमानों की सांस्कृतिक अस्मिता पर ही सबसे अधिक चोट आई। बहुत सारे मुसलमान देश विभाजन कतई नहीं चाहते थे। वे अपने मुल्क में रहना चाहते थे लेकिन हिंदुओं को लगने लगा कि जब मुसलमानों के लिए अलग देश पाकिस्तान बन ही गया तो मुसलमान यहां क्यों रुकेंगे ? इसी तरह से पाकिस्तान की सीमा रेखा में आने वाला मुसलमान वहां के हिंदुओं, सिखों को पराया मानने लगा। उसे लगा कि पाकिस्तान केवल और केवल इस्लामी राष्ट्र है। बढ़ती सांप्रदायिकता ने ऐसी आग लगाई कि हजारों घर जल उठे ,लाखों हत्याएं हुईं। स्त्रियों एवं छोटी बच्चियों के साथ भी अमानवीय व्यवहार किया गया, बलात्कार जैसी घटनायें हुईं एवं उनके अंग भंग कर दिए गए।

विभाजन से सामाजिक व्यवस्था बुरी तरह से प्रभावित हुई और विभाजन की पीड़ा को समाज ने भी करीब से देखा | विभाजन की इस पीड़ा को एक-दूसरे तक पहुंचाने की जिम्मेदारी समाज के साहित्यकारों ने अपने ऊपर उठा ली। परिणामस्वरूप हिंदी में भी कई कहानियां और उपन्यास लिखे गये जो विभाजन के बाद की स्थितियों सामाजिक, आर्थिक,राजनीति को दर्शाने में सफल हुए हैं। इन उपन्यासकारों ने साम्प्रदायिकता की गहरी होती दरार को पाटने का काम किया है। जिसे विभाजन केन्द्रित उपन्यासों के माध्यम से समझा जा सकता है।

'झूठा-सच': –

भारत विभाजन की पीड़ा को यशपाल जी ने अपने उपन्यास 'झूठा-सच' में दिखाने का प्रयास किया है | 'झूठा-सच' उपन्यास दो भागों में विभाजित एक वृहद उपन्यास है ,इसके प्रथम भाग- 'वतन और देश' में ,देश विभाजन के पहले की घटना को दिखाया गया है ,जबकि दूसरे भाग–'देश का भविष्य' में ,विभाजन के बाद की स्थिति को दिखाया गया है | यशपाल जी ने इस उपन्यास में विविध पात्रों के माध्यम से देश के विभाजन और फिर उसके संगठित होते स्वरुप को दिखाया है | इस उपन्यास के माध्यम से उपन्यासकार ने तत्कालीन पंजाब और लाहौर के साथ ही साथ अन्य विविध स्थानों पर भारत विभाजन से पीड़ित होने वालों की पीड़ा को दिखाया है |

'झूठा-सच' उपन्यास की कथा का आरंभ 'भोला पांडे' नामक एक गली ,जो लाहौर में स्थित है ,से होता है | इस गली में सभी बेहद प्रेमपूर्वक व सामाजिक सद्भाव से अपना जीवन यापन करते आते हैं ,जहां किसी का किसी से कोई धार्मिक या जातीय मतभेद या अलगाव देखने को नहीं मिलता था | ये सभी एक-दूसरे के सुख-दुख के साथी थे | इस उपन्यास के मुख्य पात्र के रूप में जयदेव पुरी और तारा को रखा जाता है जो गली के मास्टर राम लुभाया जी की संतानें थीं |

जयदेव पुरी और तारा दोनों ही बेहद संस्कारिक और शिक्षित पृष्ठभूमि में पले-बढ़े थे लेकिन दोनों के विचारों में स्वतंत्रता का भाव था | कथा में जयदेव पुरी की मेल-मिलाप या नजदीकियाँ कनक से हो जाती है ,वहीं दूसरी ओर तारा की असद से हो जाती है | इस दौरान जब देश के हालात भी एकदम नाजुक दौर से गुजर रहे थे ,जहां तारा के सामने धर्म आड़े

आ रही थी तो दूसरी ओर जयदेव पुरी के सामने आर्थिक तंगी की मौजूदगी थी | इस दौरान जब अंग्रेजों ने अपनी पकड़ मजबूत करने के उद्देश्य से "फूट डालो और शासन करो" की नीति को अपनाया था | भारत के लोगों में आपसी फूट डालने का पुरजोर प्रयास किया | जयदेव पुरी एक उच्च राष्ट्रीय विचारधारा से प्रभावित व्यक्तित्व था ,जिसे अपने इस विचारधारा के कारण ही 1943 में सलाखों के पीछे भी जाना पड़ता है | लेकिन इस दौरान भारत की स्थिति अंग्रेजों की फूट डालो और राज करो की नीति को परास्त करते हुए ,बदल चुकी थी | अब अंग्रेजों के पांव भारत से उखड़ने लगे थे और अब स्थिति अंग्रेजों के दिनों–दिन विपरीत होती जा रही थी | अंग्रेजों की स्थिति पुनः लीग के समर्थन में मजबूत न हो,इस मानसिकता के साथ भारत के तमाम नेताओं सहित गांधी ,नेहरू आदि ने भारत की पृथकता का समर्थन करते हुए पृथक राष्ट्र या द्वि-राष्ट्र के सिद्धांत की दिशा में अपने आपको बढ़ाया |

इस उपन्यास में विभाजन की त्रासदी को भोला पांडे की गली के माध्यम से व्यक्त करते हुए यशपाल जी ने कहा है "सैदमिट्ठा में मुसलमान की भीड़ ने आधी रात में बन्नी के हाते को घेर कर बहुत से मकानों में एक साथ आग लगा दी थी | दोनों तरफ से खूब बंदूक चली थी | सोमराज की बुआ और तारा का पता नहीं चल रहा था | उनके पड़ोसी माधोदास का बाप भी आग से नहीं निकल सका था | लाला सुखलाल के कंधे में गोली लगी थी | उनका मकान उन दोनों ओर के मकान और सामने माधोदास का मकान भी जल गए थे | सुखलाल के मकान के पिछवाड़े का खाली मकान भी मुसलमानों ने घेर लिया था |"**3** इस विभाजन के दौरान ही तरह–तरह की घटनाएं घटित हो रही थी | लकड़ियों पर ज़्यादतियाँ की गईं | "मैं इसे खराब करके खलीफा के यहाँ रु.50 में दे आऊंगा |" **4** इस दौरान तारा जैसी ही तमाम महिलाओं के साथ अमानवीय कृत्य, बलात्कार जैसी घटनाएं घटित होती हैं | इस विभाजन से औरतों को अपने स्त्री होने पर भी गुस्सा आता था ,वे इस दौरान निर्मित परिस्थिति से इतनी बेवस हो चुकीं थीं कि उन्हें कहना पड़ता था "सब जोर जुल्म के लिए औरत ही रह गई है | बेहया और नीचों का सब गुस्सा इसी बात में उतरता है | गाली भी देते हैं ,तो इसी बात की | बेहया जहाँ से आते हैं फिर उसी में डूबते–मरते हैं | उसे ही बेइज्जत करते हैं | औरत पर इसी बात का गुस्सा है कि इन्हें जना क्यों ?" **5** इस विभाजन के दौरान पाकिस्तान में हिन्दू लोगों की स्थिति बेहद दयनीय थी | इनकी मृत शरीर को कोई छूने वाला नहीं था | " पाकिस्तान से हिन्दू अक्सर चले गए हैं या निकाल दिए गए हैं | शेष को निकाला जा रहा है यही पॉलिसी है |" **6** लाशें इधर-उधर पड़ी हैं जिसे कोई भी उठाने वाला नहीं मिल रहा है | इस विभाजन ने हिन्दू और मुसलमान को इस कदर अलग-थलग कर दिया है कि ड्राइवर भी इस स्थिति को देखकर कहता है " रब ने जिन्हें एक बनाया था ,रब के बंदे ने अपने वहम और जुल्म से उसे दो कर दिया |" **7**

विभाजन ने अपना सर्वाधिक प्रभाव पंजाब और लाहौर में ही जमाया था | इन दोनों ही प्रांतों में विभाजन के बाद की विभीषिका देखने को मिलती है | यहाँ घटित होने वाले दंगों की भयावहता चरम पर थी | विभाजन के समय तारा और जयदेव जैसे तमाम परिवार एक दूसरे से बिछड़ कर अलग हो जाते हैं | लाहौर में निवास करने वाली आबादी ज्यादातर हिंदुओं की थी और साथ ही वहाँ की संपत्ति भी अधिकतर हिंदुओं की ही थी | लोगों की यह धारणा बनी थी कि ये जो समस्या निर्मित हुई है वह बहुत क्षणिक है और कुछ दिन में सबकुछ सामान्य हो जाएगा और सभी पुनः अपने-अपने जगह पर बस जाएंगे | किसी ने यह तनिक भी आभास नहीं किया था कि अब उनका अपने मूल स्थान पर लौटना नामुमकिन होगा | इस दौरान डॉ.प्राणनाथ की हवेली को आग के हवाले कर दिया जाता है ,इससे प्रभावित होकर उनका पूरा परिवार मजबूरन लखनऊ में चल जाता है | पुरी की सोंच ऐसी कभी नहीं बनी थी कि वह अब लाहौर कभी वापस नहीं आएगा | हिंदुओं की दुकानों को नष्ट करके उनमें आग लगा दी जा रही थी |

इस उपन्यास का प्रथम भाग लाहौर की गली एवं भोला पांडे को केंद्र में रखते हुए वहाँ की सामाजिक परिस्थितियों को दिखाते हुए ,इसकी रचना की गयी है | उपन्यास का प्रमुख पात्र जयदेव पुरी जब अपना भविष्य सँवारने नैनीताल से नौकरी की तलाश करके अपने परिवार के बीच लाहौर पहुँचता है तो देखता है कि अब यह वह देश नहीं रहा जिसे वह छोड़कर गया था,यह एक पृथक देश बन चुका है | जयदेव पुरी की तरह ही तारा भी एक शरणार्थी शिविर में अपनी तमाम मजबूरियों के साथ भी उसी शिविर में अपना जीवन-यापन करती है | नरोत्तम की मदद के बदौलत उसे भी शरणार्थी शिविर में ही एक शासकीय नौकरी मिल जाती है | इस दौरान जयदेव भी सूद जी का बहुत खास बन जाता है |

इस उपन्यास में लेखक ने यह दिखाया है कि,किस तरह स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए लोगों ने एक साथ मिलकर संघर्ष किया और आजादी के सपने बुने लेकिन आजादी के बाद सत्ता के लालच में अवसर पाकर अवसरवादी पार्टियों में तब्दील हो

गये | " अब कांग्रेस का चंदा चार-चार आने और रुपये-रुपये की रसीदों से इकट्ठा नहीं की जाती है | चुनाव फंड में मिलों,कंपनियों और बड़े-बड़े करोड़पतियों से हजारों और लाखों में चंदा आता था |" **8**

तत्कालीन सामाजिक स्थिति पर डॉक्टर अचानक से गंभीर होते हुए कहता है | गिल अब तो विश्वास करोगे कि जनता निर्जीव नहीं है | जनता मुक भी नहीं रहती है | देश का भविष्य नेता और मंत्रियों की मुट्ठी में नहीं देश की जनता के ही हाथों में है | इस उपन्यास अंत नाथ जी के इस बात के बाद खत्म होता है |

अतः निष्कर्ष में यह कहा जा सकता है कि इस उपन्यास के दो भागों में भारत विभाजन के पहले और उसके बाद की परिस्थितियों का बेहद सूक्ष्मता से आकलन प्रस्तुत किया गया है |

तमस -

'तमस' भीष्म साहनी द्वारा लिखित विभाजन को आधार बनाकर लिखा गया एक महत्वपूर्ण उपन्यास है । 'तमस' उपन्यास देशकाल की दृष्टि से विभाजन के पहले पंजाब की उथल-पुथल और वहाँ घटित साम्प्रदायिक दंगों की कथा है। यह वह समय है, जब देश में विभाजन के पहले साम्प्रदायिकता तनाव की स्थिति चरमावस्था में थी, कैबिनेट मिशन योजना के अनुसार केन्द्र में अन्तरिम सरकार का गठन किया जा चुका था इस सरकार के प्रमुख पं.जवाहर लाल नेहरू थे। लार्ड माउंटबेटन विभाजन का वातावरण बनाने के लिए प्रयासरत थे।

दो खंडों में विभाजित इस उपन्यास में पाँच दिनों की कहानी है जिसमें मूल कथा का आरम्भ नत्थू नामक एक चमार द्वारा सुअर मारने की प्रक्रिया से होता है। मुरादअली नामक व्यक्ति सलोतरी साहब के लिए (डॉक्टरी हेतु) सुअर की मांग करता है ,जिसके बाद नत्थू एक कड़े संघर्ष से किसी तरह सुअर को मार पाता है, जिसे जमादार अपने छकड़े पर उसे ढो कर ले जाता है, मस्जिद की सीढ़ियों पर मृत सुअर के मिलने की सूचना पूरे कस्बे में साम्प्रदायिक आग की तरह फैल जाती है, जब नत्थू से सुअर मरवाने के सही उद्देश्य के बारे में जानकारी होती है। मस्जिद की सीढ़ियों पर मृत सुअर के पाये जाने की खबर ने साम्प्रदायिक शक्तियों की आग को भड़का दिया। इस घटना से साम्प्रदायिक दंगों के भड़कने की आहट मिलने लगती है। हिन्दू और मुस्लिम दोनों वर्गों ने सुरक्षा की तैयारी के लिए अपनी अपनी कमर कसने की तैयारी कर ली । स्थिति धीरे धीरे- और भी भयावह हो जाती है ,लेकिन सत्ता वर्ग के अधिकारी अभी सब कुछ देख रहे हैं। उसी रात मंडी में आग लगने से नफरत की आग पूरे कस्बे में फैल जाती है।

उपन्यास के पहले भाग में साम्प्रदायिक वातावरण की पूरी पृष्ठभूमि लगभग तैयार हो जाती है। दूसरे भाग में साम्प्रदायिकता के कारण पैदा हुए दुष्प्रभावों का विवरण लिखा गया है। एक ढोह इलाही बख्श के नाम के छोटे से देहात के एक सिख दम्पत्ति हरनाम सिंह और उसकी पत्नी बंतो बलवाइयों के आने की सूचना मिलते ही अपनी थोड़ी बहुत बची पूँजी व मूल्यवान जेवरात और बंदूक लेकर दुकान में ताला लगाकर निकल पड़ते हैं। रात भर डरे-सहमे माहौल में चलते हुए एक मुस्लिम बाहुल्य इलाके ढोक मुरीदपुर में पहुँचते हैं, जहाँ एक मुस्लिम महिला उन्हें शरण देती है, जिसका पति भाग्यवश हरनाम सिंह का पुराना जान-पहचान वाला निकलता है। जिसकी वजह से उनका परिवार सुरक्षित है। हरनाम सिंह का पुत्र इकबाल सिंह को भागते हुए पकड़ लिया जाता है। इकबाल सिंह को इस्लाम धर्म कबूलने की शर्त पर जिंदा रखा जाता है |

इकबाल सिंह, बाद में वह इस्लाम धर्म को जबरन कबूल भी करता है। हरनाम सिंह की बेटी जसवीर ने गाँव के सिखों के साथ गुरुद्वारे में पनाह लेती है। बाहर से आने वाले दंगाईयों की वजह से साम्प्रदायिक दंगे की आग इतनी भड़क जाती है कि लोग अपने घर-द्वार छोड़कर सुरक्षित स्थानों की ओर पलायन करने लगते हैं । बेवस और लाचार स्त्रियाँ अपनी इज्जत बचाने की खातिर कुएं में कूद कर अपनी जान दे देती हैं । कहीं गुरुद्वारे में युद्ध परिषद की बैठक चल रही है, तो कहीं हिन्दू साम्प्रदायिकता को भड़काने के लिए स्वामी जी भाषण दे रहे हैं। राजनैतिक दलों की शान्ति सभाएं चल रही हैं, और अंग्रेज अधिकारी हाथ पर हाथ धरे साम्प्रदायिक दंगों को तमाशबीन बनकर देख रहे हैं। सैनिकों के सक्रिय होने पर लड़ाई बन्द होती है, रिलीफ कमेटी बनायी जाती है,शरणार्थी कैम्प भी बनते हैं, नुकसान के भरपाई के लिए आंकड़े इकट्ठे किए जाते हैं, अमन कमेटी बन गई है, और अमन कमेटी की बस जब निकलती है तो उसमें सबसे आगे बैठकर एकता का नारा लगाने वाला वही मुराद अली है, जिसने नत्थू नामक चमार से सुअर को मरवाकर मस्जिद की सीढ़ियों में फेंकवाया था।

इस उपन्यास में साहनी जी ने स्वतंत्रता प्राप्ति के ठीक पहले के भारतीय समाज में फैली सांप्रदायिकता, हिंसा, नफरत की आग और विभाजन की राजनीति का सफल चित्रण तो किया ही है साथ ही एक ऐसे वर्ग के चरित्र को भी उभारने का प्रयास किया है जो अपनी राजनीति का कद बढ़ाने के लिए हिंसा और दंगे का सहारा लेते हैं | उपन्यास में वर्णित इस जिले में कुछ विभिन्न तरह की शक्तियां कार्य करती दिख पड़ती हैं। कम अधिक मात्रा मे हिंदूमुस्लिम दंगों के समय सारे देश - थीं। इन- में यही शक्तियाँ कार्यरतमें कांग्रेस, लीग, हिन्दू महासभा, कम्युनिस्ट, हिंदू, मुसलमान, और सिख हैं। इस पूरे खेल में अंग्रेज अधिकारी जिनके हाथों में सुरक्षा की सारी बागडोर थी , वे बड़े ही तटस्थ हो कर मूक दर्शक बने हुए थे। क्योंकि वह अंग्रेजों का देश-समाज नहीं था ,देश जलता है तो जलने दो | क्योंकि अपना विचार रखते हुए रिचर्ड साफ-साफ कहता है 'यह मेरा देश नहीं है, न ही ये मेरे देश के लोग हैं।"**9**

रिचर्ड की बातों से स्पष्ट है कि रिचर्ड ब्रिटिश सरकार का एक ईमानदार प्रशासक के रूप में सामने आया है। उपन्यास में उसके वक्तव्यों से यह पता चलता है, कि अंग्रेज हिन्दू-मुस्लिम दोनों ही वर्गों के तनाव को किसी भी स्तर पर कम करने को तैयार नहीं है।

1. हरियश : भारत विभाजन और हिंदी उपन्यास,अनन्य प्रकाशन -दिल्ली -प्रथम संस्करण -1986 पृष्ठ- 39
2. बरनवाल वीरेन्द्र कुमार: जिन्ना एक पुनर्दृष्टि, पृष्ठ -354
3. यशपाल : झूठा-सच: वतन और देश ,लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद -2020, पृष्ठ-324
4. वही, पृष्ठ-363
5. वही, पृष्ठ-466
6. वही, पृष्ठ-473
7. वही ,पृष्ठ-482
8. यशपाल : झूठा-सच: देश का भविष्य,लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद -2020 पृष्ठ-139
9. साहनी भीष्म, तमस,राजकमल प्रकाशन वर्ष -2022 ,पृष्ठ -233